SERBD- अंतरराष्ट्रीय हिंदी शोध पत्रिका नव अन्वेषण
ISSN (Online): xxxx-xxxx
Volume 02 Issue 01, Jan - Mar, 2022

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में बदलते जीवन-मूल्य

(लघुशोध-आलेख)

लेखक
जय प्रताप सिंह
असि0 प्रोफेसर (हिन्दी)
एस.एस.वी. कालिज, हापुड़

सारांश :— भूमंडलीकरण, बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद के कारण आज अर्थ (धन) मानव-जीवन के केन्द्र में आ गया है, जिसके फलस्वरूप जीवन मूल्य तेजी से बदल रहे हैं। तकनीकी प्रभाव के कारण आज मनुष्य संवेदनहीन होता जा रहा है। इक्कीसवीं सदी के कथाकारों ने 'बदलते जीवन-मूल्यों' पर सूक्ष्म दृष्टि डालकर मानव मूल्यों के क्षरण को अपनी कहानियोंके माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

बीज शब्द - **इक्कीसवीं सदी, कहानी, जीवन-मूल्य, भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, तकनीक**

मानव जीवन के लिए जो कुछ भी कल्याणकारी, शुभ, आदर्श हो उसे जीवन मूल्य माना गया है। मानव समाज ही मूल्यों को निर्धारित करता है |समाज में उसी को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है जो उस समाज के मूल्यों को धारण किये रहता है। श्रेष्ठ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आचरण से ही शेष जन प्रभावित होते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।

जीवन-मूल्य स्थिर होते है, वे युगीन विचारधारा से प्रभावित होकर परिवर्तित होते रहते हैं। भारत एक अध्यात्म प्रधान देश रहा है। अतः यहाँ के लोगों के जीवन में अध्यात्म एवं धर्म की प्रधानता थी। परहित सरिस धर्म नहीं भाई, इसी धर्मभाव से हमारे जीवन-मूल्य भी जुड़े थे। धीरे-धीरे चिन्तन बदलाअतः जीवन-मूल्य भी बदल गये। सेवा, त्याग, ममता, प्रेमका स्थान धन-संचय, स्वार्थ, लिप्सा आदि ने ले लिया। इस प्रकार जीवन-मूल्य बदल गये, पर मानवीय मूल्य सदा स्थिर रहते है। सामाजिक व्यवस्था और विचारधारा केपरिवर्तन से मानवीय मूल्यों के प्रति विश्वास और आस्था में कमी आ सकती है और वे परिवर्तित नहीं होते हैं। आज की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या मूल्य संकट ही है।

इक्कीसवीं सदी की कहानियाँ आज के बदलते जीवन मूल्य का निर्मम साक्षात्कार करा रही है। इन कहानियों में मनुष्य की संवेदना तंत्र को पूरी तरह से झंकृत करने का अपूर्वसामर्थ्य है। भूमण्डलीकरण व बाजारवाद के दुष्प्रभावों के कारण संवेदनहीन त्रासद स्थितियों व विसंगतियों को नई सदी की हिन्दी कहानियों में रेखांकित किया गया है।

'आकांक्षा पारे काशिव' की कहानी संग्रह 'बहत्तर धड़कने तिहत्तर अरमान' में संकलित कहानी 'कन्ट्रोल ए+डिलीट' में कम्प्यूटर गेम्स की दुनिया में डूबे एवं इसकी लत से जूझते सुदीप मलिक के संवेदना शून्य हो जाने के यथार्थ के धरातल पर बुनी हुई ऐसी कहानी है जो पाठक को सन्न छोड़ जाती है।

किस तरह मशीनरी यंत्रों ने हमारी संवेदनाओं को कुन्द किया है। इनकी गिरफ्त में इस कदर है कि हम रिश्तों को भी कम तरजीह देने लगे| इस कहानी का प्रमुख पात्र सुदीप मलिक जो कम्प्यूटर का अच्छा जानकार है, एक तरह से वह गेम का मास्टर है। उससे कोई भी गेम नहीं जीत पाता है, वह कम्प्यूटर में इस कदर खो गया है कि उसे किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं है। खेल के चलते वह अपनी पत्नी अनुरीता को मौत के घाट उतार देता है। इस बात का उसे दुःख एवं पछतावा तक नहीं है कि उसने अपनी पत्नी को मारा है।..... "मुल्जिम सुदीप मलिक ने अपनी पत्नी अनुरीता की बेसवाल बैट से हत्या की और उसके छोटे-छोटे टुकड़े काटकर प्लास्टिक में बाँधकर उन्हें डीप फ्रीजर में रख दिया है। मुल्जिम के मैडिकल परीक्षण में ऐसी कोई मानसिक बीमारी का लक्षण दिखाई नहीं दिया, जिससे उसकी सजा में कमी की जाये। सिवाय इसके की उसे कम्प्यूटर पर खेले जाने वाले हिंसक खेल खेलने की लत है, जिसमें उसे किसी की दखलअंदाजी ना-काबिले बर्दाश्त है। मुल्जिम समाज से बिल्कुल कट चुका है और उसे अपने किये पर कोई पछतावा भी नहीं है।"[1]

बदलते पारिवारिक रिश्ते पर आधारित कहानी 'पापा तुम्हारे भाई' की कहानीकार युवा कथा लेखिका 'शिल्पी' है। इस कहानी में अपने चाचा के यौन कुंठा का शिकार होकर वह मौत के मुँह से बाहर आयी है- "लेकिन तुम क्या जानों, इस बार मैं कैसा घेरा तोड़कर भागी हूँ, अचानक बहुत बड़ी होकर शर्म से लिथड़ गयी हूँ। खून, रिश्ते, समाज, प्यार मेरे लिए सब बंजर-ऊसर हो गये हैं।"[2]

पापा, तुम्हारे भाई कहानी के माध्यम से शिल्पी ने बदलते जीवन के मूल्यों को रेखांकित किया है। भारतीय समाज में कुछ पारवारिक संबंध ऐसे होते है कि जिनके लिए किसी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती। घर में पापा के भाई का वहीं पवित्र रिश्ता है और पापा के न रहने पर तो घर की सारी जिम्मेदारी उसके कन्धे पर स्वतः आ जाती है। लेकिन पापा, तुम्हारे भाई कहानी में शिल्पी ने यह दिखाया है कि "घर की औरतों, बच्चों को पड़ोस के घर में बंदकर चाचा आये, सिटकनी चढ़ाई जलती आँखों से घूरते रहे। अचानक बालों से पकड़कर उन्होंने मुझे उठा लिया.....घबराकर मैंने रोते हुए कहा, यह क्या कर रहे हो आप, सोच लें, अभी मैंने पंचायत के लिए हाँ नहीं कहीं है, अगर एक बार पंच बैठ गये तो तुम दोनों फाँसी पर लटका दिये जाओगे। चाचा सौदेबाजी कर रहे थे, मैं सुन्न बैठी रोती रहीं।"[3] | चाचा अगर अपने ही बड़े भाई की बेटी से शरीर की माँग करे तो बेटी के पास स्तब्ध होकर विलाप के अलावा कुछ बचता ही नहीं है। शिल्पी की यह कहानी गिरते जीवन मूल्यों व नैतिक पतन के यथार्थ को चरितार्थ करती है |बेचैन जल में डगमगाते चाँद का यथार्थ में प्रियम अंकित ने कहा है कि- "पापा, तुम्हारे भाई, कहानी पाशविक और हिंसक पुरूष सत्ता का खूनी चेहरा उघाड़कर सामने रखती है, बिना किसी लाग लपेट के।"[4]

युवा कहानीकार 'अक्षयराज सिंह' ने 'नतीजा' कहानी के माध्यम से इक्कीसवीं सदी की कहानियों में बदलते जीवन-मूल्य को आधार बनाकर यह कहानी लिखी है। कहानी का मुख्य विषय वृद्ध एवं रोगसे पीड़ित जानवरों को बाजार से खरीदकर फर्राटा भरते राष्ट्रीय राजमार्गो पर वाहनों के सामने इन जानवरों को धक्का देकर ट्रक मालिकों को जानवर मारने के जुर्म में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) थाने में दर्ज कराने की धमकी देकर मोटा धन वसूलता है। यही उसकी जीवकोपार्जन का मुख्य आधार है। आज के बाजारवाद के प्रभाव में आकर धन प्राप्ति के लिए पूर्वजों द्वारा दी गयी मूल्यपरक एवं नैतिक शिक्षा को दरकिनार करते हुए मनुष्य किसी भी हद तक जा सकता है, चाहे इसके लिए उसे निरीह और बेजुबान समझे जाने वाले पशुओं की बलि ही क्यूँ न देनी पड़े।

बलराम सोचता है कि काश वह शरीफ न होता तो पता नहीं कितनी मस्ती करता। "बलराम शरीफ आदमी है वह किसी को कुछ कहता नहीं। चुपके-चुपके दफ्तर की लड़कियों को घूरता रहता है। वह जानता है अच्छी तरह से जानता है कि यह शरीफ आदमियों का काम नहीं।"[5]

टेलीविजन कहानी के मर्म को युवा आलोचिका डॉ स्मृति शुक्ला ने जुलाई-दिसम्बर 2009 के अनभै पत्रिका में अपने समय से मुठभेड़ करती समकालीन कहानियों में लिखा है कि आज की बहुसंख्यक कहानियाँ उपभोक्तावाद की त्रासदी का बड़ा बारीक विश्लेषण करती है। हमारी संवेदनशीलता खत्म हो गयी है और इस कारण हम मनुष्यता से एक दर्जा नीचे गिर गये है । टेलीविजन पर दिखाये जाने वाले अश्लील कार्यक्रम हमारी संस्कृति का बाजारीकरण कर रहे है, हमारे मूल्य और नैतिकता के समाजशास्त्र को कैसे ध्वस्त कर रहे है, यह भीमसेन त्यागी की कहानी टेलीविजन में देखा जा सकता है। बलराम जैसा शरीफ व्यक्ति टेलीविजन लाकर घर का बजट तो बिगाड़ ही लेता है। टेलीविजन के कार्यक्रमों ने उसके मन को, मस्तिष्क को इस कदर बीमार कर दियाहै कि वह भले बुरे में भेद करना भूल गया है और इस सबकी परिणति होती है अपने ही बेटी के प्रति बलात्कार से।"

निष्कर्षतः कह सकते है कि समाज में आधुनिकता के कारण जो दुष्परिणाम सामने आ रहे है, उनमें से एक जीवन-मूल्य भी है।इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि डालकर समाज की इस महत्वपूर्ण समस्या को सबके समक्ष प्रस्तुत किया है। आधुनिक होने का तात्पर्य हमारे पुराने मूल्य एवं संस्कार को भूल जाना नहीं है। भूमण्डलीकरण एवं बाजारवाद का प्रभाव, दिनो-दिन प्रौद्योगिकी का होता विकास, इस पूंजीवादी समाज में अर्थ प्रधानता को ही सर्वोच्च मानने के कारण समाज का हर व्यक्ति आज कुंठाग्रस्त, गहन अवसाद और हताशा युक्त जीवन जीने के लिए विवश हो रहा है। इसके लिए हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा, अतीत के जीवन मूल्यों को पुर्नस्थापित करना होगा। हमें महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, विवेकानंद तथा विनोबा भावे आदि महापुरूषों के बनाये आदर्शो पर चलना होगा। गोस्वामी तुलसीदास, कथा सम्राट प्रेमचंद, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर आदि साहित्यकारों की मानवता वादी दृष्टि को समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना होगा।

----------00--------

संदर्भ सूची

1-बहत्तर धड़कने तिहत्तर अरमान(कहानी संग्रहः आकांक्षा पारे काशिव,सामाजिक प्रकाशन, दरिया गंज, नई दिल्ली, प्रथम सं0-2017, पृष्ठ-33-34

2,3-पापा, तुम्हारे भाई: शिल्पी, हंस, सम्पादक: राजेन्द्र यादव,अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, नवम्बर,2002

4-नया ज्ञानोदयः रवीन्द्र कालिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, मई 2007 , पृष्ठ-131

5-टेलीविजनः भीमसेन त्यागी, कथा देशः हरिनारायण,सदयात्रा प्रकाशन प्रा0लि0, नई दिल्ली, अक्टूबर, 2005, पृष्ठ-14

----------00--------